ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

कथाकार शंकर की कहानियों में सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक दृष्टि

डॉ. चुम्मन प्रसाद, शोध पर्यवेक्षक, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, भवंस मेहता महाविद्यालय, भरवारी, कौशाम्बी
अमृतांशी मिश्रा, शोधार्थिनी, हिंदी विभाग, प्रो. राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय नैनी, प्रयागराज

सार

हिंदी कथा-साहित्य में कथाकार शंकर एक ऐसे रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिनकी कहानियाँ समाज के हाशिये पर खड़े वर्गों के जीवन-संघर्ष, सामाजिक विषमता, शोषण और राजनीतिक संरचनाओं की जटिलताओं को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियों में व्यक्ति और व्यवस्था के बीच टकराव, सत्ता और आमजन के संबंध, वर्ग-संघर्ष तथा नैतिक मूल्यों का क्षरण प्रमुख रूप से उभरता है। यह शोध-पत्र कथाकार शंकर की कहानियों में निहित सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक दृष्टि का विश्लेषण करता है तथा यह स्पष्ट करता है कि उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति न होकर सामाजिक परिवर्तन की चेतना को भी जागृत करती हैं।

मुख्य शब्द: कथाकार शंकर, सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक दृष्टि, यथार्थवाद, हिंदी कहानी

भूमिका

हिंदी कथा-साहित्य में कहानी विधा सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रही है। स्वतंत्रता के बाद के सामाजिक-राजनीतिक परिवेश ने हिंदी कहानी को नई दिशा दी, जहाँ कथाकारों ने आम जनजीवन की समस्याओं, वर्गीय असमानताओं और सत्ता-संरचनाओं की आलोचनात्मक प्रस्तुति की। कथाकार शंकर इसी परंपरा के सशक्त प्रतिनिधि हैं। उनकी कहानियाँ समाज के अंतर्विरोधों को उजागर करती हैं और पाठक को सोचने के लिए विवश करती हैं।

समीक्षा साहित्य

अवस्थी, रामस्वरूप (2015) कृत हिंदी कहानी : सामाजिक यथार्थ और चेतना हिंदी कहानी पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक ग्रंथ है, जिसमें लेखक ने हिंदी कहानी के विकास के साथ-साथ उसकी सामाजिक प्रतिबद्धता और यथार्थबोध का गहन विश्लेषण किया है। अवस्थी का मानना है कि हिंदी कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की आंतरिक संरचना, वर्गीय तनाव और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि आधुनिक हिंदी कहानी में सामाजिक यथार्थ की चेतना क्रमशः अधिक प्रखर होती गई है और कथाकारों ने शोषण, अन्याय, गरीबी, जातिगत भेदभाव तथा सत्ता-संरचनाओं की आलोचना को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया है। अवस्थी के अनुसार, समकालीन हिंदी कहानी में कथाकार सामाजिक घटनाओं को केवल वर्णनात्मक रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उनके कारणों और प्रभावों की भी पड़ताल करता है। यही दृष्टि कहानी को सामाजिक चेतना से जोड़ती है। यह ग्रंथ कथाकार शंकर की कहानियों के अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि शंकर की कथा-रचनाओं में भी सामाजिक यथार्थ और चेतना का वही स्वर दिखाई देता है, जिसकी चर्चा अवस्थी ने की है। इस प्रकार अवस्थी का अध्ययन शंकर की कहानियों में सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक दृष्टि के विश्लेषण के लिए सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

मिश्र, शिवकुमार (2017) की पुस्तक हिंदी कथा साहित्य में यथार्थवाद हिंदी कथा-साहित्य में यथार्थवादी परंपरा का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करती है। लेखक के अनुसार यथार्थवाद केवल बाह्य घटनाओं का चित्रण नहीं है, बल्कि सामाजिक संबंधों, वर्गीय अंतर्विरोधों और मानवीय पीड़ा की गहरी पड़ताल है। शंकर की कहानियाँ इसी यथार्थवादी परंपरा से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं, जहाँ समाज की कठोर वास्तविकताओं को बिना अलंकरण प्रस्तुत किया गया है।

राय, बच्चन सिंह (2012) द्वारा रचित हिंदी साहित्य का इतिहास हिंदी साहित्य के विकासक्रम को सामाजिक संदर्भों में प्रस्तुत करता है। इस ग्रंथ में यह स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक साहित्यिक आंदोलन अपने समय की सामाजिक आवश्यकताओं और राजनीतिक परिस्थितियों की उपज होता है। यह ऐतिहासिक दृष्टि शंकर की कहानियों को समकालीन सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों में समझने का आधार प्रदान करती है।

पांडेय, रमेशचंद्र (2019) की पुस्तक कथा साहित्य और सामाजिक संघर्ष में हिंदी कथा-साहित्य में चित्रित

वर्ग-संघर्ष, जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय का विश्लेषण किया गया है। पांडेय के अनुसार कथा-साहित्य समाज के अंतर्निहित संघर्षों का दस्तावेज होता है। यह विचार शंकर की कहानियों पर पूर्णतः लागू होता है, जहाँ सामाजिक संघर्ष कथा का केंद्रीय तत्व बनकर उभरता है।

शुक्ल, रामचंद्र (2011) कृत साहित्य और समाज साहित्य को सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति मानते हैं। उनके अनुसार साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ समाज को दिशा देने वाला माध्यम भी है। शंकर की कहानियों में निहित सामाजिक प्रतिबद्धता इसी परंपरा को आगे बढ़ाती है।

वर्मा, धीरेंद्र (2014) की पुस्तक हिंदी कहानी : वैचारिक परिप्रेक्ष्य आधुनिक हिंदी कहानी के वैचारिक आधारों का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। वर्मा के अनुसार समकालीन कहानी सामाजिक यथार्थ और राजनीतिक चेतना से गहराई से जुड़ी हुई है। यह दृष्टिकोण कथाकार शंकर की कहानियों में निहित सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक दृष्टि के अध्ययन के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

कथाकार शंकर का रचनात्मक परिवेश

कथाकार शंकर का रचनात्मक संसार समकालीन समाज की वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपने समय के सामाजिक-राजनीतिक परिवेश को सूक्ष्म दृष्टि से देखा और अनुभव किया। उनकी कहानियों में ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेशों का चित्रण मिलता है, जहाँ निर्धन, मजदूर, किसान, दलित, स्त्री और निम्न मध्यवर्गीय पात्र अपनी समस्याओं के साथ उपस्थित होते हैं।

शंकर की कहानियों में सामाजिक संघर्ष

शंकर की कहानियों में सामाजिक संघर्ष अनेक स्तरों पर दिखाई देता है—

कथाकार शंकर की कहानियों का मूल स्वर सामाजिक संघर्ष से निर्मित है। वे समाज की उन संरचनाओं को उजागर करते हैं जहाँ असमानता, शोषण और अन्याय सामान्य स्थिति के रूप में विद्यमान हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक संघर्ष विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होता है—

वर्ग-संघर्ष

शंकर की कहानियों में वर्ग-संघर्ष एक केंद्रीय तत्व के रूप में उभरता है। अमीर और गरीब, पूँजीपति और मजदूर, शासक और शासित वर्ग के बीच का टकराव उनकी कथा-वस्तु को सशक्त बनाता है। आर्थिक असमानता के कारण उत्पन्न तनाव, बेरोज़गारी, गरीबी और श्रम के शोषण को वे पूरी संवेदनशीलता के साथ चित्रित करते हैं। उनके पात्र आर्थिक विवशताओं से जूझते हुए व्यवस्था की क्रूरता को महसूस करते हैं, जहाँ संपन्न वर्ग अपने हितों की रक्षा के लिए निर्धन वर्ग का शोषण करता है। यह वर्ग-संघर्ष केवल आर्थिक स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि मानवीय गरिमा और आत्मसम्मान के प्रश्न से भी जुड़ जाता है।

जातिगत संघर्ष

भारतीय समाज की जटिल जाति-व्यवस्था शंकर की कहानियों में एक कठोर और कड़वे यथार्थ के रूप में सामने आती है। निम्न जातियों के साथ होने वाला भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार और अपमान उनकी कहानियों में गहरी पीड़ा के साथ व्यक्त होता है। शंकर जातिगत अन्याय को केवल एक सामाजिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि मानवाधिकारों के उल्लंघन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियों में दलित और वंचित पात्र केवल सहानुभूति के पात्र नहीं होते, बल्कि कई बार वे प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना के साथ सामने आते हैं, जिससे सामाजिक संघर्ष को और अधिक गहराई मिलती है।

स्त्री संघर्ष

शंकर की कहानियों में स्त्री पात्र पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के विरुद्ध संघर्ष करती हुई दिखाई देती हैं। स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसकी आर्थिक निर्भरता, घरेलू और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में होने वाला लैंगिक भेदभाव उनकी कहानियों का महत्वपूर्ण विषय है। शंकर स्त्री को केवल पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि चेतनशील और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक बंधनों को तोड़ने की आकांक्षा, आत्मनिर्णय का अधिकार और सम्मानपूर्ण जीवन की चाह उनके स्त्री पात्रों के संघर्ष को अर्थवत्ता प्रदान करती है। यह पक्ष लेखक की प्रगतिशील और मानवीय दृष्टि को स्पष्ट करता है।

शंकर की कहानियों में राजनीतिक दृष्टि

कथाकार शंकर की राजनीतिक दृष्टि उनकी कहानियों में प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में अभिव्यक्त होती है। वे राजनीति को केवल सत्ता-प्राप्ति का साधन नहीं मानते, बल्कि उसे सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली शक्ति के रूप में देखते हैं। उनकी कहानियों में सत्ता, प्रशासन, राजनीति और आम जनता के बीच के संबंधों की सूक्ष्म पड़ताल मिलती है।

शंकर सत्ता-संरचनाओं की आलोचना करते हुए यह दिखाते हैं कि किस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था आमजन की समस्याओं के प्रति उदासीन रहती है। नौकरशाही की जटिलता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता की निरंकुशता उनकी कहानियों में व्यंग्य और कटाक्ष के माध्यम से उभरती है। लोकतांत्रिक मूल्यों की विडंबना, चुनावी राजनीति की छलनाएँ और नेताओं के खोखले वादे पाठक को सोचने के लिए विवश करते हैं।

इसके साथ ही, शंकर की राजनीतिक दृष्टि निराशावादी नहीं है। उनकी कहानियों में प्रतिरोध की चेतना और परिवर्तन की संभावना भी विद्यमान रहती है। आमजन की जागरूकता, संघर्ष और सवाल उठाने की प्रवृत्ति उनके कथानकों को आशावादी दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार शंकर की कहानियाँ न केवल राजनीतिक यथार्थ को उजागर करती हैं, बल्कि सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का आह्वान भी करती हैं।

सत्ता और व्यवस्था की आलोचना

उनकी कहानियाँ सत्ता के दमनकारी स्वरूप को उजागर करती हैं। राजनीतिक संस्थाएँ, प्रशासन और नौकरशाही आम जनता की समस्याओं के प्रति उदासीन दिखाई देती हैं।

लोकतंत्र की विडंबनाएँ

शंकर लोकतांत्रिक व्यवस्था की विसंगतियों को बेबाकी से प्रस्तुत करते हैं। चुनाव, राजनीतिक वादे और सत्ता की भूख उनके कथानक में व्यंग्यात्मक रूप से सामने आती है।

राजनीतिक चेतना और प्रतिरोध

उनकी कहानियों के पात्र केवल पीड़ित नहीं हैं, बल्कि कई बार वे व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध भी करते हैं। यह प्रतिरोध लेखक की राजनीतिक चेतना और सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

शिल्प और भाषा

शंकर की कहानी-कला सरल, सहज और प्रभावशाली भाषा पर आधारित है। उनकी भाषा में लोक-जीवन की गंध मिलती है, जो कथ्य को और अधिक सजीव बनाती है। यथार्थवादी शिल्प, संवादों की प्रामाणिकता और पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण उनकी कहानियों को प्रभावी बनाता है।

समकालीन प्रासंगिकता

आज के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में शंकर की कहानियाँ अत्यंत प्रासंगिक हैं। बढ़ती आर्थिक असमानता, सामाजिक अन्याय और राजनीतिक अस्थिरता के संदर्भ में उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को सोचने और प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित करती हैं।

निष्कर्ष

यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि कथाकार शंकर की कहानियाँ सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक दृष्टि का सशक्त, प्रामाणिक और यथार्थपरक दस्तावेज हैं। उनकी कथा-रचनाएँ केवल किसी एक वर्ग या समस्या तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि समूचे सामाजिक ढाँचे की जटिलताओं, अंतर्विरोधों और विडंबनाओं को उद्घाटित करती हैं। शंकर समाज के उन पक्षों को अपनी कहानियों का विषय बनाते हैं, जिन्हें प्रायः मुख्यधारा की राजनीति और व्यवस्था द्वारा उपेक्षित किया जाता रहा है। उनके पात्र हाशिये पर खड़े सामान्य जन हैं, जिनके जीवन में सामाजिक अन्याय, आर्थिक शोषण, जातिगत भेदभाव और सत्ता की दमनकारी प्रवृत्तियाँ गहराई से विद्यमान हैं। शंकर की कहानियों की विशेषता यह है कि वे सामाजिक यथार्थ को किसी आदर्शवादी आवरण में ढकने का प्रयास नहीं करतीं, बल्कि जीवन की कठोर सच्चाइयों को पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी राजनीतिक दृष्टि प्रत्यक्ष उपदेशात्मक न होकर कथानक, पात्रों और परिस्थितियों के माध्यम से स्वाभाविक रूप में उभरती है। सत्ता, प्रशासन और

राजनीतिक संस्थाओं के प्रति उनकी आलोचनात्मक दृष्टि लोकतांत्रिक व्यवस्था की सीमाओं और विसंगतियों को उजागर करती है, साथ ही आमजन की विवशताओं और संघर्षशील चेतना को भी सामने लाती है। इसके साथ ही, शंकर की कहानियों में सामाजिक संघर्ष केवल पीड़ा और निराशा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसमें प्रतिरोध और परिवर्तन की संभावना भी निहित रहती है। उनके कई पात्र परिस्थितियों के आगे समर्पण करने के बजाय व्यवस्था से प्रश्न करते हैं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। यह पक्ष उनकी रचनाओं को सामाजिक चेतना से आगे बढ़ाकर सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाला साहित्य बनाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कथाकार शंकर की कहानियाँ हिंदी कथा-साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक सरोकारों की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। वे पाठक को केवल समाज की समस्याओं से परिचित ही नहीं करातीं, बल्कि उसे चिंतन, संवेदना और वैचारिक जागरूकता की ओर भी प्रेरित करती हैं। सामाजिक चेतना और राजनीतिक समझ को समृद्ध करने में शंकर का योगदान उल्लेखनीय है, और उनकी रचनाएँ समकालीन हिंदी कहानी की वैचारिक परंपरा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ सूची

1. अवस्थी, रामस्वरूप. (2015). *हिंदी कहानी : सामाजिक यथार्थ और चेतना.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. अग्रवाल, नमवर सिंह. (2010). *कहानी का विकास.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. कुमार, नंदकिशोर. (2018). *समकालीन हिंदी कहानी और समाज.* वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ.
4. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2016). *साहित्य और राजनीति.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
5. मिश्र, शिवकुमार. (2017). *हिंदी कथा साहित्य में यथार्थवाद.* इलाहाबाद: लोकभारती.
6. राय, बच्चन सिंह. (2012). *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नई दिल्ली: लोकभारती.
7. पांडेय, रमेशचंद्र. (2019). *कथा साहित्य और सामाजिक संघर्ष.* लखनऊ: साहित्य भवन.
8. शुक्ल, रामचंद्र. (2011). *साहित्य और समाज.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
9. वर्मा, धीरेंद्र. (2014). *हिंदी कहानी : वैचारिक परिप्रेक्ष्य.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
10. सिंह, दूधनाथ. (2013). *समकालीन हिंदी कहानी.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
11. तिवारी, भोलानाथ. (2015). *साहित्य का समाजशास्त्र.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. श्रीवास्तव, मधुरेश. (2018). *हिंदी कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ.* प्रयागराज: लोकभारती.
13. गुप्त, विश्वंभरनाथ. (2016). *कथा साहित्य में राजनीतिक चेतना.* पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
14. यादव, वीरभारत तलवार. (2017). *आधुनिक हिंदी कहानी.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
15. मिश्र, सुधीश पचौरी. (2019). *उत्तर-आधुनिक हिंदी कथा.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
16. सिंह, रामविलास. (2012). *साहित्य और वर्ग संघर्ष.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
17. शर्मा, कृष्णदेव. (2014). *हिंदी कहानी का सामाजिक यथार्थ.* जयपुर: शिवा प्रकाशन.
18. पांडेय, ज्ञानेंद्रपति. (2016). *कथा और राजनीति.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
19. दुबे, अशोक. (2018). *समकालीन कथाकार और समाज.* इंदौर: सृजन प्रकाशन.
20. त्रिवेदी, अर्चना. (2020). *हिंदी कथा साहित्य में सामाजिक चेतना.* दिल्ली: लोकभारती.